गौशाला

गौशाला कुल 48 गायों का घर है, जिनमें मुख्य रूप से भारतीय मूल की गायें हैं, जिनमें दो देशी नस्लों पर ध्यान केंद्रित किया गया है: देवनी और लाल कंधारी। लातूर जिले की देवनी तहसील में प्रसिद्ध देवनी गाय, लातूर, उस्मानाबाद, परभणी और कर्नाटक के बीदर जैसे क्षेत्रों में व्यापक रूप से पायी जाती है। दूसरी ओर, लाल कंधारी गाय की नस्ल नांदेड़ जिले की कंधार तहसील से उत्पन्न हुई है और पूरे महाराष्ट्र और उत्तर-कर्नाटक में बहुतायत में पाई जाती है। उनके उत्कृष्ट दूध उत्पादन और कृषि कार्य के लिए उपयुक्तता के कारण, इन दो नस्लों को विशेष रूप से चुना गया है।

देवनी गाय: **विशेषताएँ:** सुंदर काया, मध्यम कद, चौड़े और चौड़े कान, मुंह की ओर काला रंग, सफेद शरीर का रंग, काले खुर, लंबी पूंछ और काली अयाल
स्तनपान अवधि: प्रति वर्ष 8 से 10 महीने
दूध उत्पादन: प्रति स्तनपान अवधि में 1000 से 1500 लीटर दूध उत्पादन
तापमान: गर्म और शुष्क जलवायु के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित
भोजन: आम तौर पर प्राकृतिक चारागाहों पर चरते हैं और सूखे चारे का सेवन करते हैं
उपयोग: दोहरे उद्देश्य वाली नस्ल का उपयोग कृषि में दूध उत्पादन और भारोत्तोलन कार्य दोनों के लिए किया जाता है

लाल कंधारी गाय: **विशेषताएँ:** मजबूत शरीर, काली पानी भरी आंखें, हल्के लाल से ईंट जैसा रंग, मध्यम से लंबी पूंछ और काली अयाल, अत्यंत फुर्तीली
स्तनपान अवधि: प्रति वर्ष 8 से 10 महीने
दूध उत्पादन: 500 से 550 लीटर प्रति वर्ष
तापमान: गर्म और शुष्क जलवायु के लिए उपयुक्त, उच्च तापमान का सामना करने में सक्षम
भोजन: प्राकृतिक चारागाह और सूखा चारा
उपयोग: मुख्यतः दुग्ध उत्पादन एवं कृषि कार्य के लिए जाना जाता है